6. हिंदी कंप्यूटरी - एक समीक्षा

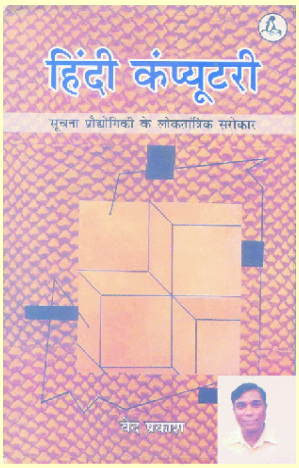

''आप अपना पत्र या लेख टाइप करते हैं, तो हिंदी में क्यों नहीं, जब आप ई-मेल भेजते हैं, तो हिंदी में क्यों नहीं, आप कंप्यूटर पर फिल्म देखना चाहते हैं तो फाइल खोलने के लिए हिंदी का प्रयोग क्यों नहीं करते, आप मोबाइल पर एसएमएस भेजते हैं तो हिंदी में क्यों नहीं। आप अपनी हिंदी को बेहतर बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक या ऑनलाइन हिंदी शब्दकोश या समांतर कोश का प्रयोग क्यों नहीं करते। अपनी अंग्रेजी को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक या ऑनलाइन अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश क्यों नहीं देखते। जब आप कंप्यूटर खरीदते हैं तो हिंदी की-बोर्ड क्यों नहीं खरीदते, आदि-आदि।

यदि मैं उपरोक्त सवाल किसी अच्छे-खासे पढ़े-लिखे हिंदी भाषी आदमी से पूछूँ तो वह कहेगा कि

एक हिंदी में ये सब काम करना संभव ही नहीं है,
दो यदि संभव है भी तो हिंदी में यह सब करना महँगा पड़ता है।
तीन हिंदी में करने में समय ज्यादा लगता है, और
चार दूसरे कंप्यूटरों पर मेरी मेल खोलने या उनकी मेल अपने कंप्यूटर पर खोलना काफी दिक्कत भरा है।

लेकिन क्या यह सच है? नहीं, कतई नहीं''

ये शब्द वेद प्रकाश की पुस्तक 'हिंदी कंप्यूटरी' के फ्लैश पर छपें हैं जो अपने आप में हिंदी के महत्व और स्थिति की बड़े प्रबल ढंग से घोषणा करते है। श्री वेद प्रकाश की पुस्तक 'हिंदी कंप्यूटरी' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। यह पुस्तक भारत में सूचना प्रौद्योगिकी में अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण पैदा हुए डिजिटल विभाजन को तोड़ने की एक महत्वपूर्ण कोशिश करती है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का आम जनता तक प्रसार तब तक संभव नहीं है जब तक की यह प्रौद्योगिकी हिंदी और दूसरी भाषाओं में उपलब्ध न हो।

आज कंप्यूटर के लगभग सभी अनुप्रयोगों के लिए हिंदी टूल उपलब्ध हैं, और भारत सरकार द्वारा हिंदी सॉफ्टवेयर टूल की सीडी लॉच करने के बाद तो वे मुफ्त में भी उपलब्ध है। लेकिन जहाँ तक हिंदी भाषी लोगों का सवाल है, आम लोगों की तो बात ही क्या, विश्वविद्यालयों के हिंदी प्राध्यापकों और सरकारी कार्यालयों के हिंदी अधिकारियों को भी इन उपकरणों की जानकारी नहीं है।

ऐसे में वेद प्रकाश की यह पुस्तक एक ऐसे गैप को भरती है जिसकी जरूरत काफी लंबे समय से महसूस की जा रही थी। यह पुस्तक उन सवालों पर विस्तार पूर्वक विचार करती है जिन्हें हम जानना तो चाहते हैं। जैसे जब हम अंग्रेजी में कोई सामग्री किसी को भेजते हैं तो फोंट की समस्या नहीं आती तो हिंदी में ई-मेल करते समय या फ्लॉपी द्वारा सामग्री भेजते समय फोंट की समस्या क्यों आती है? अंग्रेजी में तो एक ही कीबोर्ड है जिसे सीख लेने पर कोई भी अंग्रेजी में टाइप कर सकता है तो हिंदी में बहुत सारे कीबोर्ड क्यों हैं और हम कौन-सा कीबोर्ड सीखें? अगर मैं हिंदी में ई-मेल करूँगा तो क्या अंग्रेजी वाले दूसरे कंप्यूटरों पर उसे पढ़ा जा सकेगा? बल्कि यह भी कि क्या कंप्यूटर पर हिंदी में काम किया जा सकता है? क्या केवल पत्र टाइप करने का काम ही या हम टेबल बनाने, प्रैजेंटेशन बनाने और डेटाबैंक बनाने का काम हिंदी में भी कर सकते है? अगर हाँ तो इसमें कितना खर्चा आएगा? क्या कहा-एकदम मुफ्त, नहीं हो ही नहीं सकता। आप तो मज़ाक कर रहे हैं..नहीं, यह मज़ाक नहीं है। आज कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत आसान है और उसके सभी टूल मुफ्त में भी उपलब्ध है।

पुस्तक का पहला अध्याय 'सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी समाज' हिंदी भाषी लोगों की आशंकाओं को दूर कर उन्हें सूचना प्रौद्योगिकी का मित्र बनने के लिए आमंत्रित करता है, वे कहते है-''आज हिंदी कंप्यूटरी सूचना प्रौद्योगिकी में विस्फोट के लिए तैयार है। इसके लिए न उपकरणों की कमी है, न साधनों की। जरूरत है तो सिर्फ इस बात की कि हिंदी समाज और इसका प्रबुद्ध वर्ग, खासकर सरकारी हिंदी विभागों के लोग और विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों के लोग इनके प्रति जागरूक और संवेदनशील हो।'' (पृ. 24)

भारत के डिजिटल विभाजन को रेखांकित करते हुए वे अगले अध्याय 'हिंदी समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी क्यों आवश्यक है?' में कहते हैं-''यदि हम यह चाहते हैं कि हम सूचना क्रांति के केवल बाजार, उपभोक्ता और ग्राहक ही बनें, उसकी उन्नति में योगदान भी दें, उसकी समृद्धि से लाभ भी उठाए तो हमें इससे जुड़ना होगा, यह जुड़ाव कंप्यूटर या सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के रूप में तो होगा ही, एक बैंकर, बीमाकर्ता, साहित्यकार, पत्रकार, अधिकारी, वकील, न्यायाधीश, मनोरंजनकर्ता, संगीतकार, कलाकार, किसान, मज़दूर, दूधवाला, रिक्शावाला, चायवाला, कहने का अभिप्राय है कि हर स्तर, हर पेशे के स्तर पर भी होना होगा।'' (पृ. 25) वे आगाह करते हैं कि -''अगर सूचना प्रौद्यागिकी से यह जुड़ाव केवल अंग्रेजी के जरिए होना जारी रहा, जैसा कि अभी तक हो रहा है, तो समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा इसके लाभों से तो वंचित हो ही जाएगा, कालांतर में इसके प्रति द्वेषभाव भी रखने लगेगा। जो अंतत: समाज के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर देगा। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच बढ़ते विकराल अंतर को यदि समय रहते नहीं रोका गया तो इस समाज को बिखरने से बहुत समय तक नहीं रोका जा सकेगा।'' (पृ. 27) और-''विश्व समाज आज उत्तरोत्तर सूचना टैक्नालॉजी की ओर अग्रसर होता जा रहा है। अगर समाज के लोगों को अपनी मातृ भाषा में कंप्यूटर से सूचना का आदान-प्रदान करना संभव हो सके तो वे इस सूचना क्रांति में अधिक सक्रिय रूप से भागीदारी कर सकते हैं। भारत के लिए यह क्रांति केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि हमारा समाज बहुभाषी है, बल्कि इसलिए भी कि हमारा समाज विभिन्न आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तरों पर भी बँटा है। इसलिए मानव-मशीन के बीच संवाद की स्थिति पैदा करने के लिए यह जरूरी है कि उपयुक्त सूचना प्रणाली और बहुभाषा प्रौद्योगिकी के उपकरणों का विकास किया जाए और वे लोागों को किफायती कीमतों पर सुलभ हों, इसके साथ ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर उपकरणों के प्रयोग को बढ़ावा देना भी बहुत जरूरी है।'' (पृ. 28-29)

कंप्यूटर तो कोई केवल बाइनरी भाषा समझता है उसके लिए अंग्रेजी या किसी भाषा का कोई महत्व नहीं है। जरूरत इस बाइनरी भाषा के साथ हमारी भाषा का तालमेल बैठाने की होती है। और यह काम कोंडिग व्यवस्था करती है। अंग्रेजी में आस्की कोड सर्वव्यापक है तो हिंदी में कोई कोड है या नहीं। हिंदी में इस्की कोड (भारतीय मानक सूचना अंतरविनिमिय के लिए भारतीय लिपि संहिता) 1991 में भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा मानकीकृत किया गया। यह कोड ब्राह्मी लिपि पर आधारित होने के कारण सभी भारतीय लिपियों के लिए एक समान था। इस कारण एक भारतीय लिपि (जैसे देवनागरी) से दूसरी भारतीय लिपि (जैसे कन्नड़) में पूरी शुद्धता के साथ लिप्यंतरण संभव था। सभी भारतीय लिपियों के लिए एक कुंजीपटल संभव था। भाषा के वर्णानुक्रम में होने के कारण सोर्टिंग और फिल्टरिंग संभव थे। लेकिन हिंदी सॉफ्टवेयर निर्माताओं ने उसका पालन नहीं किया। नतीजतन कंप्यूटरी हिंदी में अराजकता पैदा हुई। इस कोड के बारे में विस्तृत चर्चा 'हिंदी का मानक कोड क्यों?' अध्याय में की गइ है। उद्देश्य है कि हिंदी में मानक कोड व्यवस्था लागू हो ताकि हिंदी का विकास अबाध गति से हो सके।

और यह मानकीकरण केवल हिंदी के लिए ही नहीं बल्कि विश्व की सभी भाषाओं के लिए होता है यूनिको की संकल्पना में। क्या है यूनिकोड? 'यूनिकोड : समस्याएँ अनेक समाधान एक' शीर्षक लेख में वे उत्साहपूर्वक बताते हैं-'यूनिकोड में हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं को भी स्थान मिला है।.... देर आयद दुरुस्त आयद। चूँकि यूनिकोड में देवनागरी लिपि भी शामिल है इसलिए सारे यूनिकोड समर्थित सॉफ्टवेयर खुद-ब-खुद हिंदी समर्थक हो गए हैं, बशर्ते कि आपने उनमें यूनिकोड बेस्ड हिंदी फोंट को सक्रिय किया हुआ हो। आप किसी सॉफ्टवेयर का नाम लीजिए, आप पाएँगे कि न केवल उसमें हिंदी में काम करने की सुविधा मौजूद है बल्कि उसका इंटरफेस भी हिंदी में आ चुका है। जो अभी नहीं आए है, वे भी इस राजमार्ग पर बढ़ रहे हैं। यही नए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के ज्ञान-सूचना-जानकारी के आदान-प्रदान का आधार है।' (पृ. 41-42) वे आहवान करते हैं-हिंदी कंप्यूटरी में मानक स्थापित करने ही होंगे। हमें हर हाल में यूनिकोड को अपना लेना चाहिए। यह हिंदी कंप्यूटरी की दुनिया में एक नए युग की शुरूआत है। अब हिंदी कंप्यूटर पर केवल पत्र टाइप

करने वाली भाषा बन कर नहीं रह सकती। इसे नई प्रौद्योगिकी के हर चरण में अपनी ताकत दिखानी है। यदि हिंदी समाज प्रण कर लें कि वह यूनिकोड व अन्य तय मानकों का ही प्रयोग करेगा तो फिर सूरज निकला ही समझो।' (पृ. 48)

जिसने भी कभी हिंदी में कंप्यूटर पर टाइप किया है या करवाया है वह निश्चित ही हिंदी फोंट की समस्या से जूझा होगा। इस समस्या के कारणों पर विस्तारपूर्वक जानना हो तो 'ये हिंदी फोंट क्या है? शीर्षक अध्याय पढ़िए। कितनी तरह के हिंदी फोंट होते हैं-पोस्ट स्क्रिप्ट फोंट, टू टाइप फोंट, अंग्रेजी फोंट, बाइलिंग्वुअल फोंट, डायनेमिक फोंट, वैब फोंट और ओपनटाइप फोंट। लेकिन सम्सया का हल क्या है?-'ओपन टाईप फोंट सब रोगों की दवा हैं, ये यूनिकोड आधारित सभी अनुप्रयोगों को समर्थन देते हैं।' (पृ.58)

एक पाठ -विंडोज़-2000 और विंड़ोज एक्सपी में हिंदी को सक्रिय कैसे करें पर भी है। जो बहुत उपयोगी है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पाठ है 'हिंदी में टाइप कैसे करें?' इस पाठ में उन्होंने रेमिंग्टन कीबोर्ड और इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड की बात की है। इंस्क्रिप्ट की बोर्ड की वैज्ञानिकता, बहुभाषिता, तीव्रता आदि को इतने अच्छे ढंग से बताया गया है कि आप पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ही हिंदी में टाइप सीखने को उत्सुक हो उठते है। यह अध्याय हिंदी में एक कुंजीपटल की वकालत करता है। और हिंदी सॉफ्टवेयर निर्माताओं द्वारा दुनियाभर के कीबोर्ड उपलब्ध कराने की निंदा करता है। उनका दावा है कि -'यदि हम केवल गृह कतार के अक्षरों के स्थान याद कर लें तो हिंदी के तकरीबन 70 फीसदी अक्षरों का स्थान याद हो जाता है। गृह कतार के अक्षरों को याद करने का आसान तरीका है, केवल एक पंक्ति 'ओए अइ उ परकत चट' को याद कर लेना।... इस प्रकार यदि हम चाहें तो इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल पर मात्र 1 घंटा अभ्यास करके हिंदी में टाइप करना सीख सकते हैं।' (पृ. 101)

हमारे स्वतंत्रता सैनानियों ने एक सपना लिया था कि यूरोप की तरह भारत की सभी भाषाओं की लिपि एक हो, देवनागरी हो। इस सपने में महात्मा गाँधी, शहीद भगत सिंह, बाल गंगाधर तिलक जैसे महान नेता शामिल थे। इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल इस सपने को पूरा करने के लिए परिवर्धित देवनागरी की कूटबद्ध करता है। यानी उन ध्वनियों को भी टाइप करने की सुविधा प्रदान करता है जो हिंदी में नहीं हैं लेकिन हमारी दूसरी भारतीय भाषाओं जैसे उर्दू, तमिल, तेलुगू आदि भाषाओं में हैं। वे ठीक ही इंस्क्रिप्ट कुंजीपटल को राष्ट्रीय एकता की ओर बढ़ता कदम कहते है-'इसलिए देवनागरी-इंस्क्रिप्ट कुंजी पटल को अपनाना भारत की राष्ट्रीय एकता को लिपि एकता और भाषा एकता के जरिए सुदृढ़ करना है।' (पृ. 109)

पुस्तक का अंतिम पाठ भारत सरकार द्वारा जारी हिंदी सॉफ्टवेयर उपकरण' नामक सीडी पर है। वे कहते हैं-'भारतीय भाषाओं की कंप्यूटरी के इतिहास में वर्ष 2005 ऐतिहासिक है। इस वर्ष भारत सरकार ने ऐसा कदम उठाया है कि जिससे भारतीय भाषाओं की कंप्यूटरी के रास्ते में आने वाली सारी बाधाओं और समस्याओं का हल भाषा सीडी में उपलब्ध करा दिया। और वह भी बिल्कुल मुफ्त, जिसे आप निस्संकोच अपने मित्रों को वितरित भी कर सकते है।' (पृ. 110) इस अध्याय में वे इस सीडी में दिए एक-एक उपकरण पर चर्चा करते हैं। वे गदगद होकर कहते हैं-'यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि यह लोकार्पण भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी के स्वप्न को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, यह महान अपेक्षाओं को जगाता है। यह निश्चय ही विश्व ज्ञान हासिल करने और स्थानीय जरूरतों के मुताबित ज्ञान को अनुकूलित करने और रचने को प्रेरित करेगा। हिंदी का प्रयोग नाटकीय ढंग से व्यक्तिगत कंप्यूटरों की खपत को बढ़ाएगा, हिदी समाज को प्रौद्योगिकी-मित्र बनने में सहायता प्रदान करेगा। (पृ. 120)

अंत में मैं इस पुस्तक की भूमिका के लेखक यूपीएससी के सदस्य डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल की इस बात के साथ पूरी सहमति व्यक्त करती हूँ कि-'इस किताब को पाठक हाथों हाथ लेंगे-कम से कम मुझे तो इस बात का पूरा यकीन है।'

पुस्तक का नाम	:	हिंदी कंप्यूटरी
लेखक	:	वेद प्रकाश
प्रकाशक	:	लोक मित्र, 1/6588, सी-1, रोहतास नगर (पूर्व), शाहदरा, दिल्ली-110032
प्रथम संस्करण	:	2007
मूल्य	:	175/-

समीक्षक-
कु. स्वर्ण लता
निदेशक, टी.डी.आई.एल.
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग